प्राकृतिक विभाजन

भौतिक प्रदेश

➢ भौतिक बनावट से तात्पर्य चट्टानों को संचना, उच्चावच का स्वरूप, मिट्टयां, ढाल तथा अपवाह प्रतिरूप आदि प्राकृतिक धरातलीय स्वरूपों से है। छत्तीसगढ़ को भौतिक बनावट के आधार पर निम्नांकित भागों में विभक्त किया जाता है–

1. महानंदी का मैदान

(अ). मध्यवर्ती पंखाकार महानदी बेसिन
- **(i)** स्वनाय – महानदी दोआव
- **(ii)** शिवनाथ पार का मैदान
- **(iii)** बिलासपुर का मैदान (पअ) हसदो मांड वेसिन
- **(iv)** महलदी पार का संकरा मैदान

(ब) **सीमांत उच्च भूमि** –
- **(i)** उत्तरी उच्च भूमि
- **(ii)** मैकल श्रेणी
- **(iii)** दक्षिणी उच्च भूमि
- **(iv)** पूर्वी उच्च भूमि (रायपुर उच्च भूमि)

2. जशपुर कुसमी पाट
- **(i)** ऊपरी घाट (कुसमी पाट)
- **(ii)** नोच घाट (जशपुर पाट)
- **(iii)** मैनपाट

3. बघेलखण्ड पठार का पूर्वी भाग

4. दण्डकारण्य

- **(i)** कोटरी महानदी का मैदान (कांकेर बेसिन)
- **(ii)** अबूझमाड़ की पहाड़ियां (पपप) उत्तरी–पूर्वी पठार
- **(iii)** दक्षिण का पठार
- **(iv)** गोदावरी–सवरी का मैदान

छ.ग. का प्राकृतिक एवं भौगोलिक विभाजन

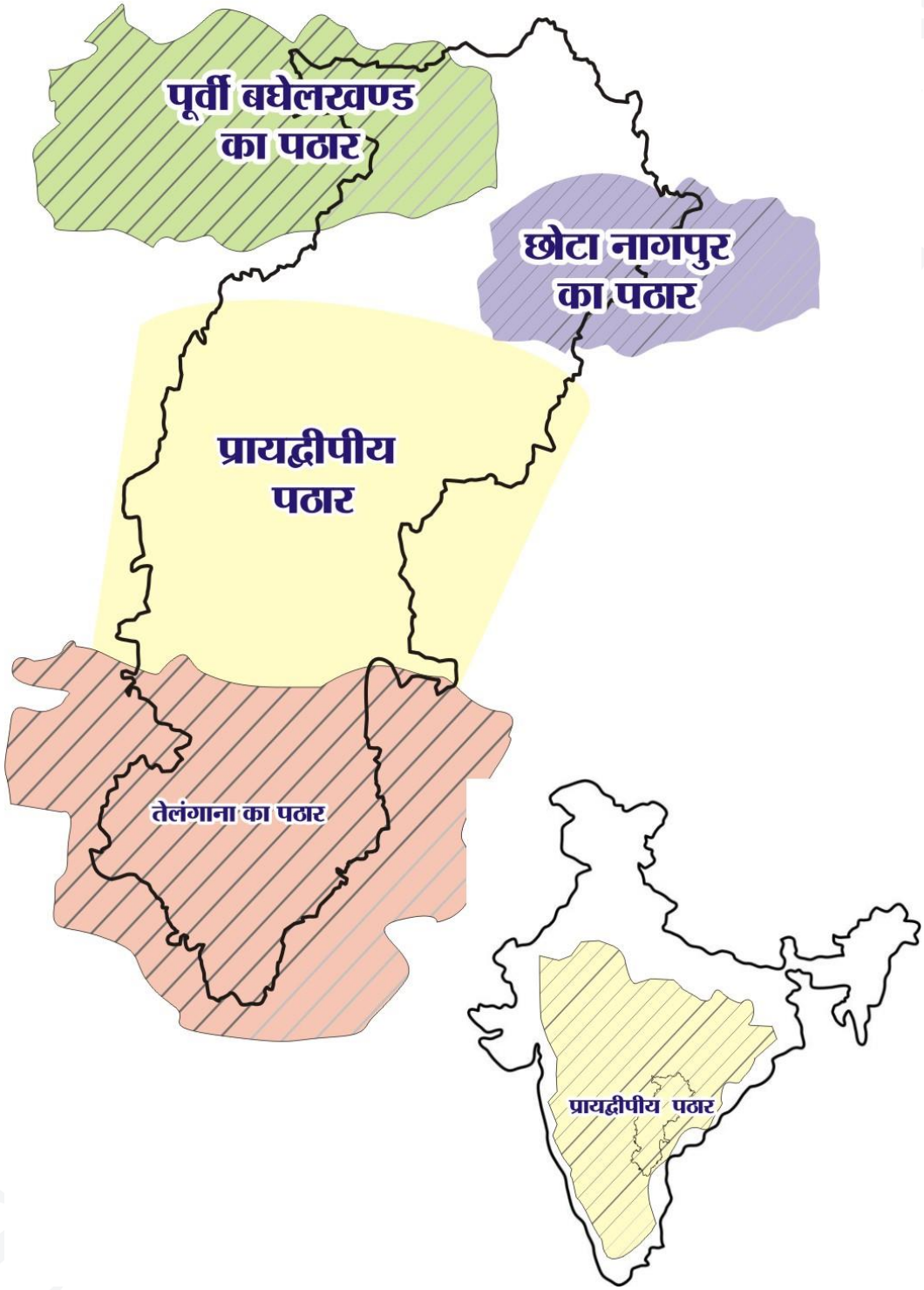

1. **मैदान** :–
ऐसा विस्तृत क्षेत्र जो प्रायः समतल हो वह धराजल पर मिलने वाले अपेक्षाकृत समतल निम्न भू–भाग को मैदान कहते हैं जिनका ढाल एकदम न्यून होता हैं।

2. **पठार** :–
धरातल का विशिष्ट स्थल वो जो अपने आस–पास के जमीन से पर्याप्त ऊँचा होता है, जिसका उपरी भाग चौड़ा और सपाट हो पठार कहलाता है।

3. **पर्वत** :–
पर्वत पृथ्वी की सतह की प्राकृतिक ऊचाई हैं पर्वत का शिखर छोटा तथा आधार चौड़ा होता है पर्वत की ऊचाई धरातल से 1000 मी. से अधिक होती है। जब बहुत सारे पर्वत एक रेखा के क्रम में व्यवस्थित होते है तब उसे पर्वत श्रृंखला कहा जाता है।

4. **पहाड़** :–
पहाड़ी पर्वत का लघु रूप होता है जिसका क्षेत्रीय विस्तार कम और ऊचाई 1000 मी. से कम होता है तो उसे पहाड़ी कहते है।

5. **घाटी** :–
दो पहाड़ो के बीच के समतल मैदान को घाटी कहते हैं भूगोल मे नदियो के उपजाउ मैदान को भी उस नदी की घाटी कहते है ।

- छ.ग. के प्राकृतिक विभाजन को चार भागो में विभाजित किया गया है।
  1. पूर्वी बघेलखण्ड का पठार
  2. छोटा नागपुर का पठार
  3. प्रायद्वीपीय का पठार
  4. तेलंगाना का पठार

छ.ग. का प्राकृतिक विभाजन

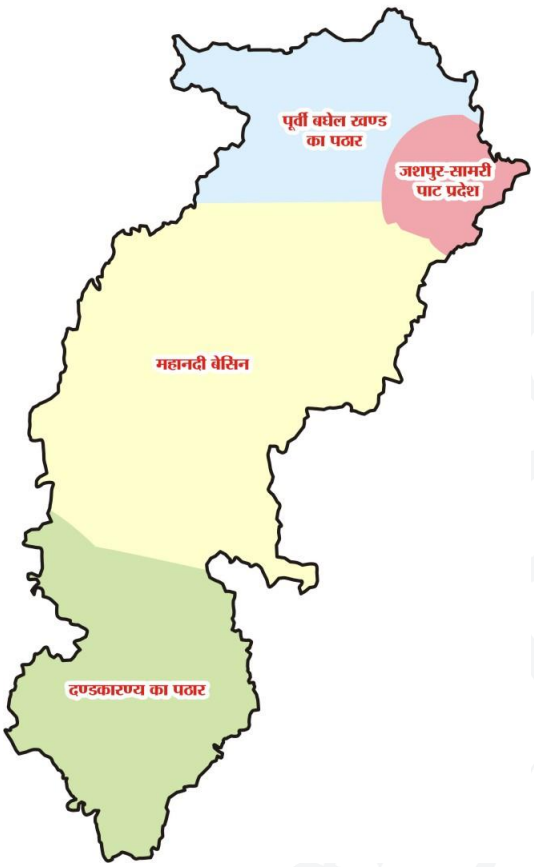

- छ.ग. का उत्तर पश्चिमी हिस्सा बघेलखण्ड के पठार के अंतर्गत आता है अर्थात् पूर्वी बघेलखण्ड के पठार का उत्तरपूर्वी हिस्सा छ.ग. में स्थित है।
- छ.ग. का उत्तरपूर्वी हिस्सा छोटानागपुर के पठार के अंतर्गत आता है अर्थात् छोटा नागपुर के पठार का पश्चिमी हिस्सा छ.ग. में स्थित है।
- तेलंगाना के पठार का उत्तरी क्षेत्र छ.ग. के अंतर्गत आता है अर्थात् छ.ग. का दक्षिणी हिस्सा तेलंगाना के पठार में आता है।
- छ.ग. प्रायद्विपीय पठार के उत्तरी पूर्वी भाग में स्थित है।

- पूर्वी बघेलखण्ड के पठार का क्षेत्रफल 21,863 वर्ग कि.मी. है जो कि छत्तीसगढ़ के कुल क्षेत्रफल के 16.16 प्रतिशत भाग तक विस्तृत है।
- जशपुर पाठ प्रदेश का क्षेत्रफल 6205 वर्ग कि.मी. है जो छत्तीसगढ़ के कुल क्षेत्रफल का 4.58 प्रतिशत भाग मे विस्तृत है।
- महानदी बेसिन का क्षेत्रफल 68064 वर्ग कि.मी. है जो कि छत्तीसगढ़ के कुल क्षेत्रफल के 50.34 प्रतिशत भाग पर विस्तृत है।
- दण्डकारण्य के पठार का क्षेत्रफल 39060 वर्ग कि. मी. है जो कि छत्तीसगढ़ के कुल क्षेत्रफल के 28. 19 प्रतिशत भाग पर विस्तृत है।

छ.ग. का क्षेत्रफल

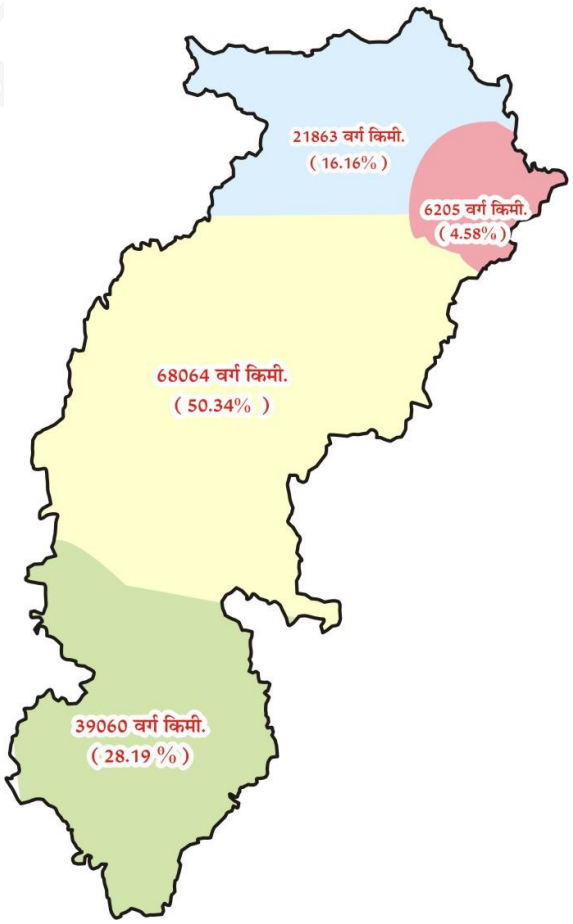

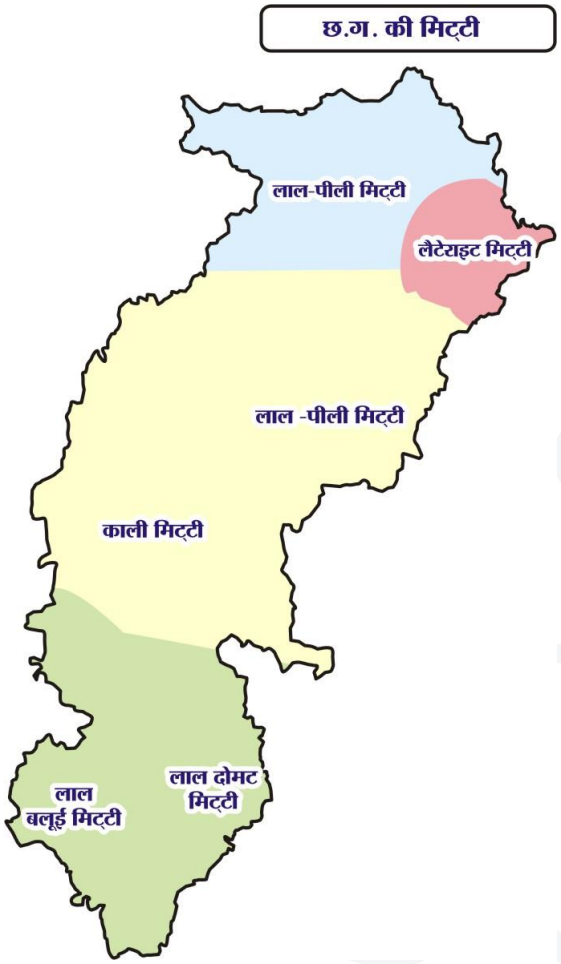

- पूर्वी बघेलखण्ड के पठार में लाल–पीली मिट्टी पायी जाती है ।
- जशपुर पाठ प्रदेश में लैटेराइट मिट्टी पायी जाती है।
- महानदी बेसिन क्षेत्र मे लाल–पीली मिट्टी व काली मिट्टी का विस्तार है।
- दण्डकारण्य के पठार में लाल बलुई मिट्टी व लाल दोमट मिट्टी पाया जाता है।

- पूर्वी बघेलखण्ड के पठार में मुख्यतः गोडवाना शैल समूह का विस्तार है। जहाँ खनिज के रूप में कोयला पाया जाता है।
- जशपुर पाठ प्रदेश में मुख्यतः दक्कन ट्रैप शैल समूह का विस्तार है जहाँ खनिज के रूप मे बाक्साइड पाया जाता है।
- महानदी बेसिन में मुख्यतः कड़ापा शैल समूह तथा किम्बरलाइट पाईप का विस्तार है जहाँ खनिज के रूप मे चूना पत्थर, डोलोमाइड व हीरा पाया जाता है।
- दण्डकारण्य के पठार में मुख्यतः धारवाड़, नीस व पल्सर समूह का विस्तार है जहाँ खनिज के रूप में लौह आयस्क, टीन व ग्रेफाइड पाया जाता है।

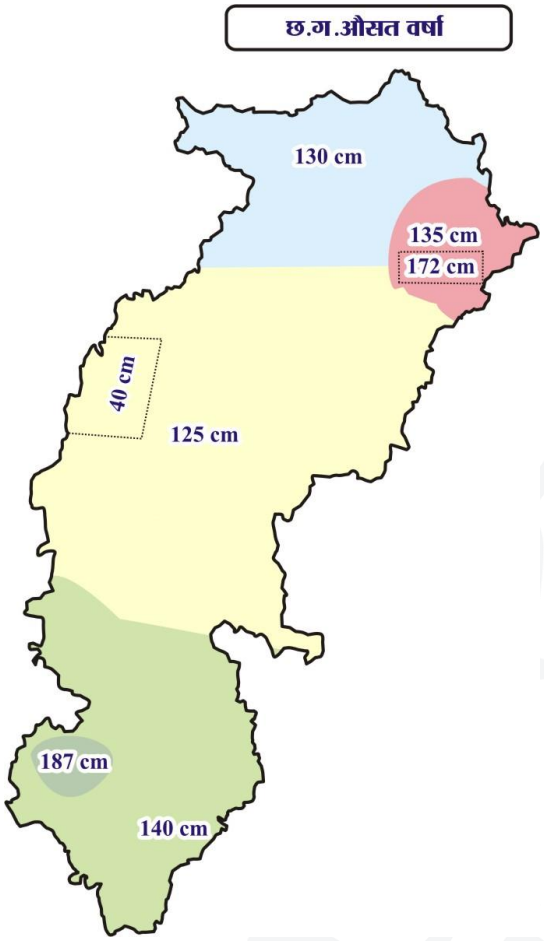

- पूर्वी बघेलखण्ड के क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा 130 से.मी. होता है।
- जशपुर सामरी पाट प्रदेश में 135 से.मी. औसत वार्षिक वर्षा होता है जहा जशपुर जिला छत्तीसगढ़ में सार्वाधिक वर्षा वाला जिला है।
- महानदी बेसिन क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा 125 से.मी वर्षा होती है तथा मैकल श्रेणी में सबसे कम 40 से. मी. वर्षा होती है।
- दण्डकारण्य के पठारी क्षेत्रो में 140 से.मी. औसत वार्षिक वर्षा होती है वही अबुझमाड़ की पहाड़ीयों में सर्वाधिक 187 से.मी. वर्षा होती है। जिसके कारण इसे छत्तीसगढ़ का चेरापुंजी कहा जाता हैं।

- पूर्वी बघेलखण्ड क्षेत्र में मुख्यतः गेंहू, सोयाबीन, तिलहन व मिर्च मसालें फसल होता है।
- जशपुर पाठ प्रदेश में बाघवानी फसलें चाय, आलु, टमाटर, लीची, कटहल जैसे बाघवानी फसलें
- महानदी बेसिन क्षेत्र में मुख्यतः धान, गेहू सोयाबीन, कपास, गन्ना, चना फसल होता है।
- दण्डकारण्य के पठारी में मुख्यतः मोटे अनाज पायें जाते है जैसे कोदो, कुटकी, कुल्थी तथा सल्फी. केला, कॉफी, नारियल आदि फसल होता है।

- पूर्वी बघेलखण्ड के पहाड़ की सबसे ऊची चोटी देवगढ़ की पहाड़ी है जिसकी ऊचाई 1033 मी. है।
- जशपुर पाट प्रदेश की सबसे ऊंची चोटी गौरलाटा, 1225 से.मी. व मैनपाट 1152 मी. है छत्तीसगढ़ राज्य की सबसे ऊंची चोटी गौरलाटा इसी पाट प्रदेश में स्थित है।
- महानदी बेसिन क्षेत्र की सबसे ऊंची चोटी बदरगढ़ 1176 मी. है।
- दण्डकारण्य के पठार की सबसे ऊंची चोटी नन्दीराज 1210 मी. व अबुझमाड़ 1076 मी. है।

- पूर्वी बघेलखण्ड के पठार की समुद्र सतह से औसत ऊचाई 300–700 मी. है।
- जशपुर पाट प्रदेश जिसकी समुद्री सतह से औसत ऊचाई 700 मी. है।
- महानदी बेसिन की औसत ऊचाई समुद्री सतह से 300 मी. है।
- दण्डकारण्य के पठार की औसत ऊचाई समुद्र तल से 700–900 मी. है।

पूर्वी बघेलखण्ड का पठार

- पूर्वी बघेलखण्ड पठार के अन्तर्गत बलरामपुर के कुसमी तहसील को छोड़कर शेष बलरामपुर कोरिया, सूरजपुर जिले और सरगुजा के मैनपाट को छोड़कर शेष भू–भाग इसके अन्तर्गत आते हैं। प्रदेश का कुल क्षेत्रफल 20.700 वर्ग कि.मी. है जो राज्य के कुल क्षेत्रफल का 15.31% है।
- इस प्रदेश में बहुत अधिक कटे–फटे पठार, पहाड़ियां, कगार आदि भू–दृश्य हैं। स्थिर सपाट भू–खंड को पाट कहते हैं। मध्यवर्ती मैदान और उत्तरी पाट को रिहंद और कन्हार नदियां अलग करती हैं। हसदो और गेज नदी चिरमिरी और कोरियागढ़ श्रेणी के किनारे–किनारे बहती है। इस प्रदेश में कोयला का पर्याप्त भण्डार है जो सोनहत पहाड़ी, झखराखंड और चिरमिरी में है।

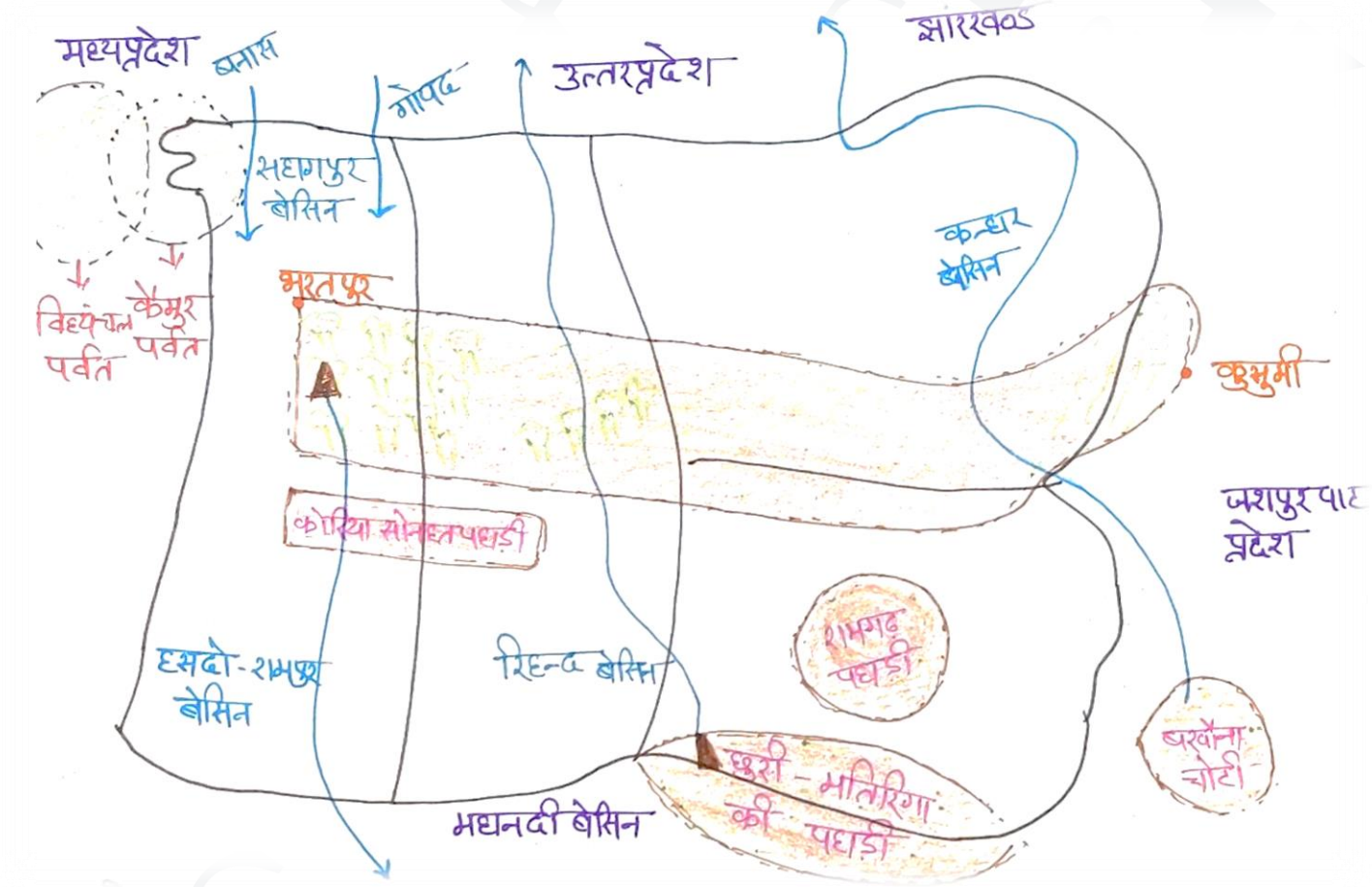

- प्रदेश के पश्चिमी भाग चांग भखार– कोरिया क्षेत्र में मटीले बलुआ पत्थर की विषम पहाड़ियां हैं इस पहाड़ी का विस्तार पूर्व में रेहर नदी से पश्चिम में भरतपुर तहसील तक है। दक्षिण–पश्चिम में धोबोताल और (उमारता पर्वत श्रेणी की चोटियां हैं। मुख्य श्रेणी का विस्तार पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर है।
- मध्यवर्ती उच्च मैदान प्रदेश के दक्षिण भाग एवं मैनपाट की सीमा पर दक्षिण–पूर्व में स्थित है। इसके उत्तर में चिरवेन तथा हराई पहाड़ी है। 'टॉगलेवा, डुला पहाड़ और पर्ता हिल दक्षिण–पश्चिम भाग में स्थित है। अम्बिकापुर और सूरजपुर के मध्य सेरेहर नदी और गुंगाटा नदी दक्षिण से उत्तर की ओर प्रवाहित होती है। इसे सरगुजा बेसिन भी कहते हैं।
- उत्तर में उत्तरी पाट और पहाड़ी क्षेत्र स्थित हैं। इसका विस्तार पूर्व में सिन्दूरनाला से पश्चिम में केहर नदी के मध्य उत्तरी पहाड़ी श्रेणियां एवं छोटे– छोटे पठार स्थित हैं। इस के मध्य बारथी, अन्धारी और बिसोर सोटी नदियां पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर बहती है।.

- सोन घाटी अभिनति घाटी (एक दरार घाटी) में बहती है। इसके दोनों किनारे गोंडवाना युगीन शैलें मिलती हैं। सोन नदी उत्तर की ओर प्रवाहित होती हुई गंगा नदी में मिल जाती है। दूसरी ओर मांड और हसदो नदियां उत्तर से दक्षिण की ओर बहती हुई महानदी में मिल जाती हैं।

क्षेत्रफल	▪ 21863 वर्ग किमी. (16.16%)
विस्तार	▪ कोरिया, सुरजपुर, बलरामपुर (सामरी–कुसमी छोड़कर), सरगुजा (मैनपाट, सीतापुर,लुण्ड्रा तहसील छोड़कर) ▪ छ.ग. का उत्तरी पश्चिम क्षेत्र हैं
औसत ऊंचाई	▪ 300–700 मी.
शैल समूह	▪ गोंडवाना
प्रमुख खनिज	▪ कोयला
सबसे ऊंची चोटी	▪ देवगढ़ की पहाड़ी (1033 मी.)
प्रमुख नदियां	▪ हसदेव नदी, रिहन्द नदी, कन्हार नदी, नेयुरनदी, बनास, गोपद, पवई
प्रमुख जनजातियाँ	▪ कोल, भील, खैरवार, उरांव, कोरकू, पण्डो
औसत वर्षा	▪ 125–130
मिट्टी	▪ लाल–पीली मिट्टी
फसल	▪ धान, तिलहन मसाले
पूर्वी बघेलखण्ड के बेसिन	▪ सुहागपुर बेसिन, हसदो – रामपुर बेसिन, रिहन्द बेसिन, कन्हार बेसिन

जशपुर सामरी पाट प्रदेश

- छत्तीसगढ़ की उत्तरी–पूर्वी सीमा में स्थित जशपुर कुसनी पाट प्रदेश के अन्तर्गत जशपुर जिला तथा बलरामपुर जिले की कुरानी तहसील तथा मैनपाट के क्षेत्र आते हैं। पठारी क्षेत्र के समतल ऊपरी भाग को पार्ट' कहा जाता है। इस प्रदेश के उत्तरी भाग से होकर कर्क रेखा गुजरती है। इस पठारी प्रदेश का विस्तार उत्तर से दक्षिण की ओर 150 कि.मी. तथा पूर्व से पश्चिम की ओर 85 कि.मी. है। इरा प्रदेश का विस्तार 6205.9 वर्ग कि.मी. है जो प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 4.59 प्रतिशत है।

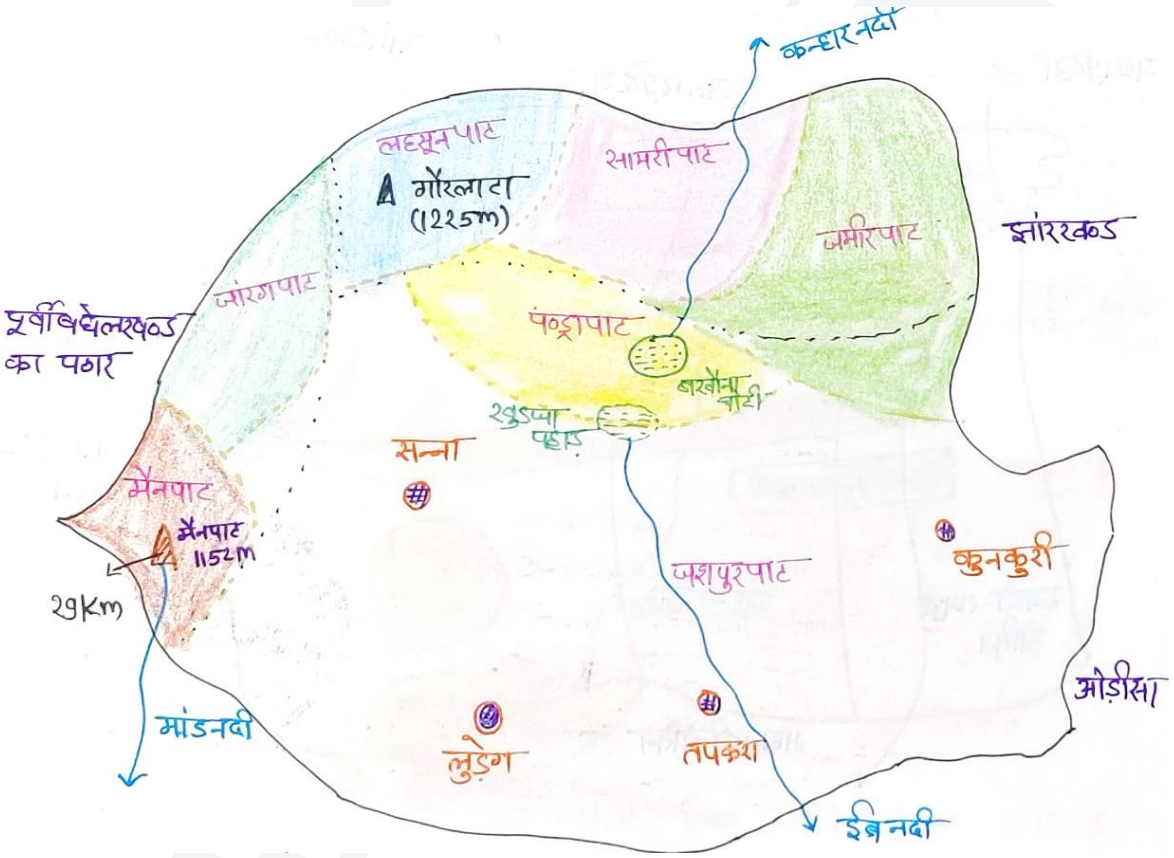

- जशपुर – कुसमी पाट प्रदेश प्राचीन शैलों से निर्मित हैं। अधिकांश भागों में अन्तर्वेधी आग्नेय शैलें हैं। अन्य चट्टानों में धारवाड़ समूह, लेटेराइट एवं रवेदार नाइस हैं। जशपुर कुसमी पाट का धरातल सीढ़ीनुमा है। यहां कई समतल तल तीव्र ढालों के द्वारा एक दूसरे से अलग होते हैं। ईब – मैनी नदी का एक तीव्र ढाल क्षेत्र है जिसके ऊपर जाने पर 400 से 1000 मीटर ऊंचा भाग मिलता है, उसे स्थानीय भाषा में 'पाट' कहते हैं। वास्तव में यह समतल शिखर वाले समतल प्राय मैदान हैं जो उत्थान के फलस्वरूप ऊपर उठ गये हैं। जशपुर जिले में मैनी नदी के उत्तर का समस्त भू–भाग जशपुर पाट है इसे नीच घाट भी कहते हैं

1. **कुसमी पाट** (ऊपर घाट) – जशपुर जिले का उत्तरी भाग तथा दक्षिणी बलरामपुर जिले का कुसमी का क्षेत्र ऊपरघाट कहलाता हैं। इसके अन्तर्गत खुरिया तथा जशपुर पठार आते हैं। यहां पश्चिम से पूर्व की ओर ग्रेनाइट युक्त कठोर चट्टान दीवार के रूप में स्थित हैं। ऊपर घाट का क्षेत्रफल 2,225 वर्ग कि.मी. है।
   - ✓ इस भू–भाग की समुद्र सतह से औसत ऊंचाई 600 से 750 मी. के मध्य है। गंगा तथा महानदी की सहायक नदियों द्वारा विच्छेदित कई कटक अलग–अलग दिशाओं में फैली हुई हैं जिसके कारण आवागमन में बड़ी बाधाएं उत्पन्न होती हैं। ऊपर घाट पर महाखड्ड (गार्ज) तथा संकीर्ण घाटियों का बाहुल्य है। पाट सामान्यतः ऊसर हैं या वहां पर घास के मैदान हैं।

- ✓ खुरिया पठार की महत्वपूर्ण चोटियों की समुद्र सतह से ऊंचाई क्रमशः पण्डरापाट 1123 मी.. बुरजूडीह 123.5 मी. भँवर पहाड़ 1028 मी. (तेंदूपाट 1038 मी और सुलेशा पहाड़ी की ऊंचाई 1118.6 मी. है। जशपुर नगर की समुद्र सतह से ऊंचाई 770.5 मी. है।
- ✓ ऊपरघाट में अवर्गीकृत रवेदार शैलें पाई जाती हैं। खुरिया पठार में लेटेराइट चट्टानों का आवरण है जशपुर–कुसमी पाट की विच्छेदित पठार की स्थलाकृतियों को विकास की चार अवस्थाओं में बांटा गया है–
  - **प्रथम अवस्था** इस प्रदेश की रचना विभिन्न शैलों से हुई है।
  - **द्वितीय अवस्था** नदियों के अपरदन के फलस्वरूप यह क्षेत्र समतल प्राय मैदान बन गया।
  - **तृतीय अवस्था** यह क्षेत्र विभिन्न भागों में बंटकर विभिन्न ऊंचाईयों में ऊपर उठ गया। जिसके कारण यह पाट कहलाया।
  - **चतुर्थ अवस्था** – नदियों द्वारा इन पाटों तथा तीव्र ढालू प्रदेशों को काटकर विच्छेदित किया गया। यह प्रक्रिया वर्तमान में जारी है। जिसके कारण धरातलीय विषमताएं अधिक है।

2. **नीच घाट (जशपुर पाट)** – ऊपर घाट को सीमांकित करने वाले कगार के दक्षिण का क्षेत्र 'नीच घाट' या 'जशपुर पाट' कहलाता है। इसे (ईब मैनी घाटी भी कहते है नीच घाट का विस्तार 4304 वर्ग कि.मी. है।
   - ✓ जिसकी समुद्र सतह से ऊंचाई 275 मीटर से 500 मीटर के मध्य है। उत्तरी पहाड़ियां उत्तर से दक्षिण की ओर श्रृंखलाबद्ध हैं जैसे साखेल एवं (कोसंगा की पहाड़ियां इत्यादि दूसरी ओर पत्थलगांव और करीलडोंगर को श्रेणियां दक्षिण–पूर्व की ओर श्रृंखलाबद्ध हैं।
   - ✓ यहां की स्थलाकृतियां नदियों द्वारा दीर्घकाल से होने वाले अपरदन से प्रभावित हैं और वे गोलाकार हैं। ग्रेनाइट यहां की प्रमुख चट्टानें हैं। मैनी नदी जशपुर की पश्चिमी सीमा पर एक छोटी सी घाटी का निर्माण करती हैं जिसे काकिया क्षेत्र कहते हैं।

3. **मैनपाट** – यह छोटा नागपुर पठार समूह पर भारत की वृहत मध्यमी जल विभाजक रेखा के किनारे एक ऊंचा पठार है। सरगुजा में मैनपाट सबसे ऊंची चोटी की समुद्र सतह से ऊंचाई 1158 मीटर है।
   - ✓ दक्षिण में यह उदयपुर हिल से लगा हुआ है। मांड नदी इसकी पूर्वी सीमा बनाती है। इसके पूर्व एवं पश्चिम में पर्वत श्रृंखलाएं है। पाट के ऊपरी सतह पर लेटेराइट मिट्टी में एल्युमिना का बहुत अधिक अंश है। पूर्व में मांड नदी उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर प्रवाहित होती है। पश्चिम में रेहर नदी, उत्तर में रिहंद की सहायक गुनगुटा नदी दक्षिण से उत्तर दिशा की ओर बहती है।

क्षेत्रफल	▪ 6205 वर्ग किमी. (4.58%)
विस्तार	▪ '' जशपुर, बलरामपुर, (सामरी, कुसमी तहसील), सरगुजा (मैनपाट, सीतापुर, लुण्ड्रा) ▪ छ.ग. के उत्तर पूर्वी में इसका विस्तार है।
औसत ऊंचाई	▪ 700 मी
शैल समूह	▪ दक्कन ट्रैप
प्रमुख खनिज	▪ बॉक्साइड
सबसे ऊंची चोटी	▪ गौरलाटा (1225 मी.) लहसूनपाट में (राज्य की सबसे ऊंची चोटी)
प्रमुख नदियाँ	▪ ईब नदी, कन्हार नदी, मांड नदी
प्रमुख जनजातियाँ	▪ उरांव, नगेसिया, खैरवार, पहाड़ी कोरबा, पारधी, सोनझरिया
औसत वर्षा	▪ 172 सेमी..
मिट्टी	▪ लेटेराइट मिट्टी
फसल	▪ बागवानी फसल
पाट प्रदेश पूर्व से पश्चिम	▪ जशपुर पाट, जमीर पाट, पण्ड्रापाट, सामरीपाट, लहसूनपाट, जारंगपाट,
पाट प्रदेश पश्चिम से पूर्व	▪ मैनपाट मैनपाट, जारंगपाट, लहसूनपाट, पण्ड्रा, सामरीपाट जमीरपाट
सन्ना	▪ छ.ग. का स्वीटजरलैण्ड
	▪ छ.ग. का शिमला
	▪ टमाटर की राजधानी

तपकरा	▪ नागलोक (सर्प केन्द्र बनाने की घोषण केन्द्र सरकार द्वारा) ▪ सोने की खान है। ▪ छ.ग. में सर्पदंश से सर्वाधिक मृत्यु यही पर होती है।
जशपुर घाटी	▪ सबसे बड़ा पाट प्रदेश है। ▪ फुलों की घाटी (लोरोघाटी) ▪ सबसे पूर्वीपाट प्रदेश ह ▪ निम्न पाट है।
जमीरपाट	▪ सर्वाधिक खनिज मिलता है। ▪ सामरीपाट प्रदेश का ही हिस्सा है।
पण्ड्रापाट	▪ कन्हार नदी व ईबनदी का उद्गम स्थल है। ▪ सर्वाधिक बागवानी फसल मिलता है। ▪ कैलाशगुफा स्थित है। ▪ बाक्सॉइड मिलता है। ▪ सबसे सुन्दरपाट प्रदेश है।
सामरीपाट	▪ छ.ग. का सबसे उत्तरीपाट प्रदेश है। ▪ सबसे ऊंचा पाट प्रदेश है।
लहसून पाट	▪ राज्य की सबसे ऊंची चोटी गौरलाटा (1225 मी.) स्थित हैं।
जारंगपाट	▪ बॉक्साइड मिलता है तथा बॉक्साइड का मैदान कहलाता है।
मैनपाट	▪ छ.ग. का सबसे ठंडा स्थान है। ▪ इसकी ऊंचाई 1152 मी. है। ▪ छ.ग. का शिमला कहा जाता है। ▪ 1962 से मिब्बतियों का शरणस्थली है। ▪ टमाटर व आलू रिसर्च सेंटर स्थापित ▪ सफेद मसूली की खेती ¼तिब्बतियों द्वारा की जा रही हैं। ▪ बॉक्साइड खनिज मिलता है। ▪ पर्यटन स्थल टाइगर प्वांट, मछली प्वांट, मेहता प्वांट, एकोप्यांट

महानदी बेसिन

- महानदी एवं उनकी सहायक नदियों के प्रवाह क्षेत्र महानदी बेसिन कहते हैं। इसके अन्तर्गत राज्य के राजनांदगांव (मोहला तहसील को छोड़कर) दुर्ग, बेमेतरा, बालोद, रायपुर, बलौदाबाजार, गरियाबंद, धमतरी, महासमुंद, विलासपुर, मुंगेली, जांजगीर–चांपा, कोरबा, रायगढ़ एवं कबीरधाम 15 जिलों के क्षेत्र आते हैं। इनका विस्तार 68,064 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल में है। इस तरह छत्तीसगढ़ के कुल क्षेत्रफल के 50ः (50–33ः) से अधिक क्षेत्र पर महानदी बेसिन का विस्तार है।

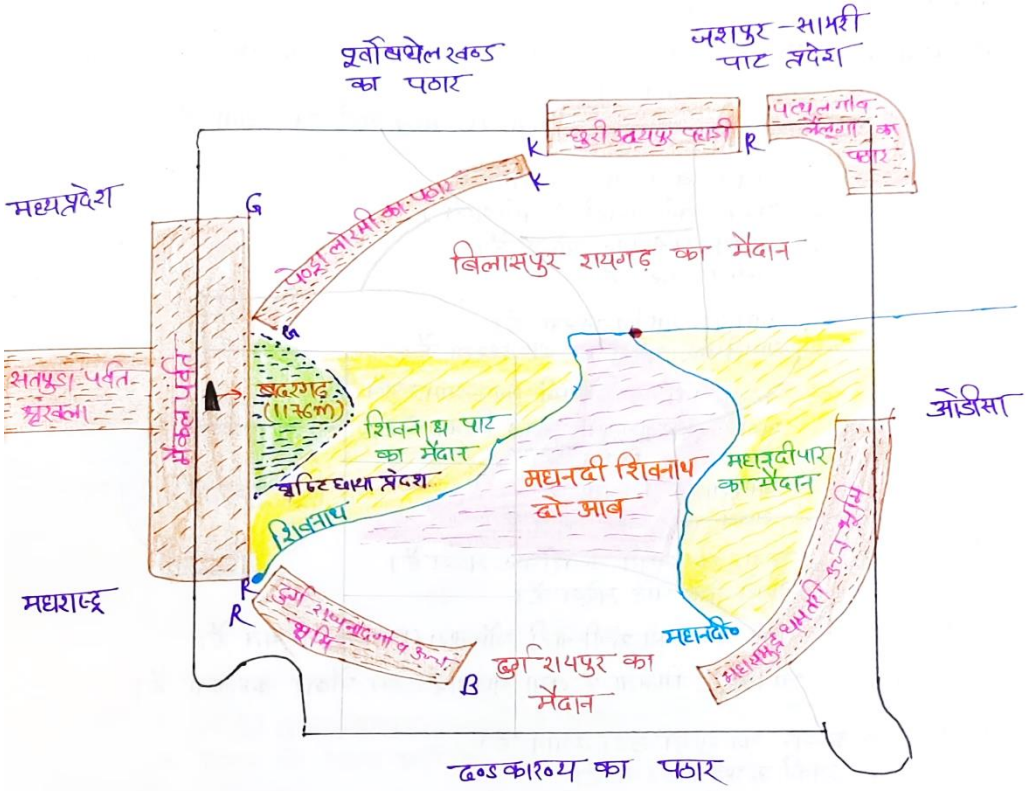

- महानदी बेसिन का ढाल पूर्व एवं उत्तर–पूर्व की ओर है। इनकी आकृति तस्तरीनुमा हैं। बेसिन के मध्य क्षेत्र की समुद्र सतह से ऊंचाई 300 मीटर से कम है। केन्द्र में ऊंचाई 300 मीटर से कम है। केन्द्र से चारों ओर जाने पर ऊंचाइयों में क्रमशः वृद्धि होती जाती है। उत्तरी भाग में कहीं कहीं 1000 मीटर से भी अधिक ऊंचा भू–भाग है। उच्चावच की दृष्टि से इसे दो भागों में विभक्त किया जाता है–

1. **महानदी बेसिन** – इसे छत्तीसगढ़ का मैदान भी कहते हैं। इसका विस्तार लगभग 31,600 वर्ग कि.मी. भू–भाग पर है छत्तीसगढ़ के मैदान की उत्पत्ति कड़प्पा शैल समूह के क्षैतिजिक अवसादी शैलों पर महानदी एवं उनकी सहायक नदियों के अपरदन के जमाव के परिणाम स्वरूप निर्मित हुआ है। पूर्वी सीमा क्षेत्रों की समुद्र सतह से ऊंचाई 220 मीटर से 330 मीटर तक है। इसे निम्नांकित उपविभागों में विभाजित किया गया है।

   (i) शिवनाथ महानदी दोआब • शिवनाथ महानदी की घाटी महानदी बेसिन के दक्षिण भाग में स्थित है। इसके अन्तर्गत शिवनाथ और खारुन नदियों का प्रवाह क्षेत्र है। इस क्षेत्र की समुद्र सतह से ऊंचाई 200 से 300 मीटर के मध्य है। घाटी की ढाल दक्षिण से उत्तर दिशा की ओर है। यहां चूना पत्थर, शेल और कड़प्पा युगीन चट्टानें पाई जाती हैं।

   (ii) शिवनाथ पार का मैदान यह प्रदेश शिवनाथ नदी के पश्चिम में हैं। इसके अन्तर्गत छत्तीसगढ़ के मैदान का पश्चिमी भाग आता है, जहां मैकल पर्वत श्रेणी से निकलकर प्रवाहित होने वाली अमरेन, सुरहीं. क और हांफइत्यादि नदियों का प्रवाह क्षेत्र, शिवनाथ पार का मैदान है यहां कड़प्पा युगीन शेल चट्टानें पाई जाती हैं। इस मैदान की समुद्र तल से औसत ऊंचाई लगभग 300 मीटर है। भाटा भूमि के नीचे पीली सरंध्र और बलुई

मिट्टी पाई जाती है. जिसे मटासी और डोरसा कहते हैं। यह पीली और काली मिट्टी का मिश्रण हैं। नए जमे गाद (सिल्ट) को कछार कहते हैं।

(iii) **बिलासपुर का मैदान** – यह महानदी बेसिन का उत्तरी भाग है इसके पश्चिमी भाग पर अरपा–लीलागर का मैदान – है। इसके पूर्व में हसदोमांड का मैदान है। इसके उत्तर–पश्चिम में लोरमी का पठार और उत्तर पूर्व में हसदो बेसिन है। इसके पश्चिम भाग में मैकल पर्वत श्रेणी है। लोरमी और हसदो बेसिन के मध्य पेन्ड्रा का पठार है। मैदान की औसत ऊंचाई 200 से 300 मीटर के मध्य है। इस क्षेत्र में अरपा, आगर, मनियारी तथा लीलागर नदियां प्रवाहित होती है। यहां केवल रतनपुर और (सेन्टी पहाड़िया) हैं।

(iv) **हसदो – मांड बेसिन** – ''यह क्षेत्र छत्तीसगढ़ बेसिन के पूर्वी भाग पर स्थित है। यहां हसदो मांड और कैलो नदियां – प्रवाहित होती हैं। कोरबा, जांजगीर चांपा और रायगढ़ जिलो में इसका विस्तार है। इस क्षेत्र का विस्तार चिंवर (ढाल (कुम्हार पहाड़) तथा (सारंगढ़ पहाड़ियों के मध्य है। पूर्व की ओर धीरे–धीरे संकरी होती जाती है। इस क्षेत्र में कड़प्पा युग की चूने की चट्टानें तथा शैलों पर जमा एक विस्तृत जलोढ़ मैदान हैं। रायगढ़ जिले के मैदान की समुद्र सतह से ऊंचाई 230 मीटर है।

(v) **महानदी पार का संकरा मैदान** – महानदी पार का क्षेत्र महानदी के पूर्व में स्थित एक संकरी पेटी है जो पूर्व में – रायपुर की उच्च भूमि और इसके पश्चिम में महानदी – शिवनाथ दोआब क्षेत्र है। छत्तीसगढ़ के मध्य भाग से पूर्व – की ओर किनारे–किनारे स्थित है। इसके अन्तर्गत धमतरी का उत्तरी–पूर्वी भाग, रायपुर तहसील और बलौदाबाजार का पश्चिमी भाग आते हैं। यहां कड़प्पा युगीन शेल और चूना युक्त चट्टानें पाई जाती हैं।

2. सीमान्त उच्च भूमि छत्तीसगढ़ का मैदान चारों ओर से उच्च भूमि द्वारा घिरा हुआ है। यह उच्च भूमि आद्य गोंडवाना और दक्कन ट्रैप इत्यादि शैल समूहों द्वारा निर्मित हैं। इसका विस्तार लगभग 36,464 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में है। भू–वैज्ञानिक संरचना में विविधता के कारण तथा नदियों द्वारा विच्छेदन के कारण उच्च भूमि कई पहाड़ियों, श्रेणियों, पठारों और द्रोणियों में विभक्त हो गया है–

i. उत्तरी उच्च भूमि –

- ✓ इसके अन्तर्गत महानदी बेसिन के उत्तरी जिलों के उत्तरी उच्च भू–भाग आते हैं। सर्वाधिक विच्छेदित भू–भाग उत्तर–पूर्व में छुरी तथा उदयपुर की पहाड़ियां है। इन दोनों के मध्य में मांड नदी प्रवाहित होती है। इसके पूर्वी भाग में मांड और केलो द्वारा निर्मित 'रायगढ़ बेसिन है। इसके पश्चिम भाग में हसदो नदी द्वारा निर्मित हसदो रामपुर बेसिन है। छत्तीसगढ़ बेसिन को उत्तरी उच्च भूमि से अलग करने के लिए रायगढ़ के दक्षिण–उत्तरी भाग में छोटी–छोटी पर्वतों की एक श्रृंखला है जिसे 'चंवर ढाल' कहते हैं। जांजगीर (सक्ती और (खरसिया का मैदानी भाग इसके अन्तर्गत आते हैं।
- ✓ उदयपुर पठार रायगढ़ जिले के उत्तर–पश्चिम मध्यवर्ती भाग में स्थित है। इसके पश्चिम में मांड नदी बहती है तथा पूर्वी भाग पर कुरकुट नदी बहती है। यह भू–भाग उत्तर में नीच घाटी से जुड़ा हुआ है। सब ऊंचा स्थल मैनीफर के निकट 760 मीटर है। लैलूंगा के पास की पहाड़ी की समुद्र सतह से ऊंचाई 723 मीटर है। उसके पश्चिम भाग में छुरी हिल्स और उत्तर में मैनपाट स्थित है।
- ✓ छुरी हिल्स के पश्चिम भाग में हसदो नदी तथा पूर्वी भाग में मांड नदी बहती है। इसके दक्षिण–पश्चिम में कोरबा बेसिन है। छुरी पहाड़ी के उत्तर में (महादेव पहाड़ है। उत्तरी भाग में हसदो रामपुर बेसिन है। पश्चिम में पेन्ड्रा पठार है। यहां गोंडवाना, तालचेर और बाराकर चट्टानें पाई जाती हैं। यहां चूना पत्थर, रेत पत्थर तथा शैल चट्टानें पाई जाती हैं। रेत पत्थर तथा शैल संस्तरों के बीच–बीच में कोयले का बहुत बड़ा निक्षेप है।

ii. मैकल श्रेणी –

- ✓ मैकल श्रेणी सतपुड़ा पर्वत का पूर्वी कगार है, जो छत्तीसगढ़ बेसिन के पश्चिम भाग में एक दीवार की तरह खड़ा है। यह राजनांदगांव जिले की उत्तरी–पश्चिमी तथा कवर्धा की दक्षिणी–पश्चिमी सीमा बनाती है। शिवनाथ तथा वैनगंगा के बीच की जल विभाजक रेखा भी जिले की सीमा के भीतर उत्तर से दक्षिण की ओर गई हैं। इस पर्वत श्रेणी की पूरी श्रृंखला घने वनों से आच्छादित हैं। केवल डोंगरगढ़ के पास दक्षिण में खुली हुई घाटी हैं। लेकिन बाानगढ़ की चोटी 1127 मीटर ऊंची है तथा अमरकंटक की चोटी की ऊंचाई 1057 मीटर है।
- ✓ मैकल की श्रेणी आगे बढ़ती हुई कवर्धा तेक चली गई है जहां इसे बिल्फी घाट श्रेणी कहते हैं। श्रेणी के पूर्वी भाग में तेज खड़ी ढाल वाला किनारा (कार्य) है जिसकी समुद्र सतह से ऊंचाई 340 मीटर से 610 मीटर के मध्य है। इसके उत्तर में लोरमी पेन्ड्रा का पठार तथा दक्षिण में शिवनाथ घाटी है। मैकल की तेज ढाल पेन्ड्रा पठार को अलग करता है। स्कार्प का विस्तार चंदली पहाड़ तक 65 कि.मी. हैं लामन हिल के दक्षिण में इस श्रेणी का विस्तार पश्चिम से पूर्व की ओर है जो संकरे गार्ज के द्वारा कन्साई नाला और मनियारी टैंक से अलग होता है। यहां आद्य महाकल्पीय शैल समूह तथा दक्कन ट्रैप के दृश्यांश पाये जाते हैं।

iii. दक्षिणी उच्च भूमि –

✓ इसके अन्तर्गत राजनांदगांव, बालोद और दुर्ग जिलों के दक्षिणी भाग, रायपुर जिले का दक्षिण–पूर्वी भाग तथा धमतरी, गरियाबंद और महासमुंद के कुछ भाग आते हैं। बालोद जिले का खरखरा और तांदुला के मध्य का मध्यवर्ती कूटक राजहरा पहाड़ी है जिसकी समुद्र सतह से ऊंचाई 674 मीटर है जो लौह निक्षेप के कारण महत्वपूर्ण की है।

iv. पूर्वोच्च भूमि –

✓ रायपुर की कली भूमि रायपुर जिले के दक्षिण–पूर्ण भाग में अर्धचन्द्राकर रूप में फैली हुई है। यहां का सबसे ऊंचा भाग सोनबेरा पठार है जिसकी समुद्र सतह से ऊंचाई 943 मी. है। दक्षिण में सिहावा की पहाड़ी है जिसकी समुद्र सतह से ऊंचाई 586 मीटर है। रायपुर की उच्च भूमि के उत्तरी–पूर्वी भाग में एक निम्न भूमि है, जिसे 'बसना बेसिन' कहते हैं। सारंगढ़ तहसील में पहाड़ियों की प्रमुख श्रृंखला बलौदाबाजार जिले की सोनाखान पहाड़ियों से पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर विस्तृत है द्य सबसे ऊंची चोटी सारंगढ़ नगर की मध्यान्ह रेखा के समीप स्थित है जिसकी समुद्र सतह से ऊंचाई 582.5 मीटर है। उत्तरी कटक चन्द्रपुर के पार महानदी से लगा हुआ है। पूर्वी महासमुंद, धमतरी की तांदुला और महानदी की घाटियों में बालोद क्षेत्र ऊंचे उठे हुए भू–भाग हैं। बलौदाबाजार का दक्षिण–पूर्वी भाग, महासमुंद का पूर्वी भाग और गरियाबंद का कुछ भाग पर्वतीय क्षेत्र हैं। पश्चिम के पठार की सर्वोच्च ऊंची चोटी बड़े पाट डोंगर है जिसकी समुद्र सतह से ऊंचाई 1006 मीटर है । सिहावा की पहाड़ी सोन्दूर घाटी के पश्चिम और धमतरी के दक्षिण में स्थित है। उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर कई पहाड़ियां है जैसे मुंडागिरी की समुद्र सतह से ऊंचाई 680 मीटर है। बोरडा पहाड़ की समुद्र सतह से ऊंचाई 617 मीटर, काटीगांव की समुद्र सतह से ऊंचा 631 मीटर, गिधावा पर्वत की समुद्र सतह से ऊंचाई 732 मीटर और सिहावा पर्वत की सागर तल से ऊंचाई 586 मीटर है, जो महानदी का उद्‌गम स्थल है।

विस्तार	▪ बिलासपुर संभाग, रायपुर संभाग, दुर्ग संभाग (मोहेला, मानपुर तहसील छोड़कर) ▪ छत्तीसगढ़ के 16 जिलों में विस्तार है। ▪ सबसे बड़ा प्राकृतिक प्रदेश है। ▪ इसका आकार पंखाकार है।
औसत ऊंचाई	▪ 200–300 मी.
शैल समूह	▪ कड़प्पा, किम्बरलाइट पाईप
प्रमुख खनिज	▪ चूनापत्थर डोलामाइट, हीरा
सबसे ऊंची चोटी	▪ बदरगढ़ (1176 मी.)
प्रमुख नदियां	▪ महानदी, शिवनाथ, खारून, अरपा ▪ शिवनाथ नदी छत्तीसगढ़ के मैदान को दो भागों में बाटती हैं 1. बिलासपुर – रायगढ़ का मैदान 2. दुर्ग – रायपुर का मैदान
प्रमुख जनजातियां	▪ कमार, बैगा, हल्बा, अगरिया, भुजिया, बिंझवार
औसत वर्षा	▪ 125–130 सेमी.
मिट्‌टी	▪ लाल–पीली, काली मिट्‌टी
फसल	▪ धान, तिलहन, कपास, गन्न
छ.ग. का सबसे गर्म स्थल	▪ जांजगीर–चांपा
छ.ग. में सबसे कम वर्षा	▪ कर्वधा (40मी.)
छायावृष्टि जिले	▪ कवर्धा, उत्तरीराजनांदगांव, मुंगेली, बेमेतरा, दुर्ग
महानदी शिवनाथ दोआब जिले	▪ बलौदाबाजार, रायपुर, दुर्ग
महानदी पार में आने वाले जिलें	▪ पूर्वी बलौदाबाजार, रायगढ़ का दक्षिणी हिस्सा, गरियाबंद, महासमुंद
शिवनाथ पार मे आने वाले जिले	▪ दुर्ग, बेमेतरा, कर्वधा, राजनांदगांव का उत्तरी क्षेत्र

दण्डकारण्य का पठार

➢ इसके अन्तर्गत सुकमा, नारायणपुर, कोंडागांव. बीजापुर बस्तर, दंतेवाड़ा और कांकेर जिले तथा राजनांदगांव के मोहला तहसील आते हैं। दण्डकारण्य प्रदेश छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिण भाग में स्थित है। उत्तर से दक्षिण की ओर 270 कि.मी. लम्बा तथा पूर्व से पश्चिम की ओर 188 कि.मी. चौड़ा है। दण्डकारण्य का कुल क्षेत्रफल 39,114 वर्ग कि.मी. है।

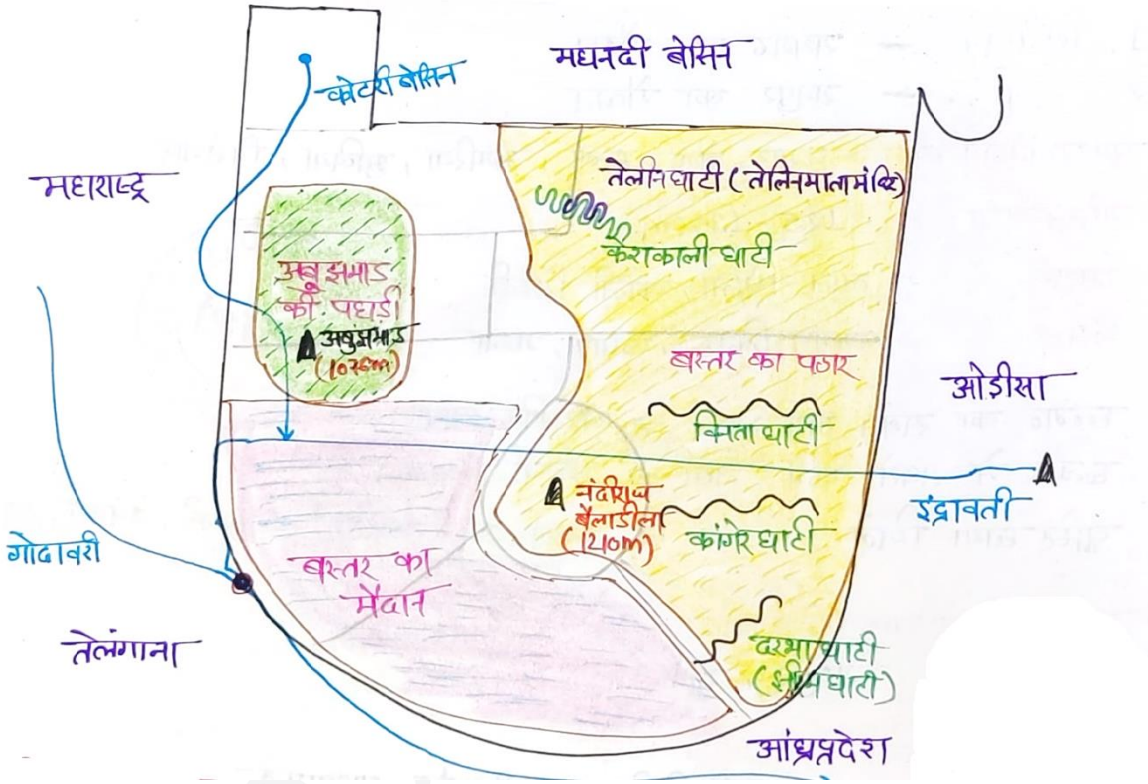

- इस प्रदेश के उत्तर में महानदी का मैदान, दक्षिण भाग में गोदावरी घाटी, पूर्व में उड़ीसा का कोरापुट पठार तथा सबरी नदी घाटी, पश्चिम में वैनगंगा और गोदावरी नदी की घाटी दण्डकारण्य प्रदेश की सीमा बनाती है। मध्यवर्ती भाग में पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर इन्द्रावती नदी प्रवाहित होती हुई गोदावरी नदी में मिल जाती है। इस प्रदेश को निम्नांकित उपप्रदेशों में विभाजित कर सकते हैं–

i. **कोटरी महानदी का मैदान (कांकेर बेसिन)** – यह प्रदेश कांकेर जिला का उत्तरी भाग है जो उत्तर में महानदी बेसिन – से लगा हुआ है। कोटरी नदी राजहरा की पहाड़ी से निकलती है। इसके पूर्वी भाग महानदी और उसकी सहायक नदियां प्रवाहित होती हैं। महानदी दक्षिण से उत्तर दिशा की ओर प्रवाहित होती हैं। दोनों नदियों के प्रवाह क्षेत्र के उत्तरी भाग में कांकेर बेसिन स्थित है। इस मैदान की समुद्र सतह से औसत ऊंचाई 300 मी. से 500 मी. के मध्य है। यहां प्रतापपुर तथा कोयलीबेड़ा के मध्य उत्तर से दक्षिण की ओर फैली हुई एक विस्तृत पर्वत श्रृंखला है यह मैदान धारवाड़ चट्टानों से निर्मित है। कांकेर के दक्षिण में तेलीन घाट है जो उत्तरी पूर्वी पठार से अलग होता है।

ii. **अबूझमाड़ की पहाडिया** – इस भू–भाग का अधिकांश क्षेत्र नारायणपुर के दक्षिण–पश्चिम भाग में विस्तृत है। इसके उत्तर में कोटरी नदी का मैदान है। दक्षिण की सीमा इन्द्रावती नदी बनाती है। बीजापुर उच्च भूमि की ऊपरी भाग तथा पूर्व में इंद्रावती की सहायक बोरधिग नदी इस प्रदेश की सीमा बनाती है। इस पहाड़ी का विस्तार नारायणपुर के परलकोट से दक्षिण की ओर 100 कि.मी. तथा पूर्व से पश्चिम की ओर चौड़ाई 60 कि.मी. है। अबूझमाड़ की पहाड़ियां पश्चिम में नारायणपुर की पश्चिमी सीमा से प्रारंभ होकर पूर्व की ओर छोटे डोंगर तक 60 कि.मी. की चौड़ाई तक विस्तृत है। यह पहाड़ी ग्रेनाइट तथा नाइस शैलों से निर्मित है। अबूझमाड़ पहाड़ी की उत्तरी दक्षिणी तथा पूर्वी सीमा पर धारवाड़ तथा कड़प्पा की शैलें पायी जाती हैं। (सोनपुर की घाटी अबूझमाड़ की को उत्तरी भाग को पहाड़ी की शेष भाग से अलग करती है। अबूझमाड़ पहाड़ी के उत्तर–पूर्व में रावघाट पहाड़ी स्थित है। जहां लौह अयस्क का लगभग 732 मि. टन को 6 विभिन्न निक्षेप हैं जो उच्च कोटि के हैं।

iii. **उत्तर–पूर्वी पठार** – इस पठार का प्रारंभ दण्डकारण्य के उत्तरी मैदान से कांकेर के दक्षिण में केशकाल घाटी के पास एक प्रपाती कगार के रूप (समुद्र सतह से लगभग 800 मीटर ऊपर उठा हुआ है। जगदलपुर के पास इन्द्रावती नदी की घाटी में इस पठार की ऊंचाई 200 मीटर घटकर लगभग 600 मीटर रह जाती है। इसके उत्तर में तेलीन घाटी तथा उत्तर–पश्चिम में मतला घाटी की प्रपाती ढाल के द्वारा कोटरी महानदी के मैदान से ऊपर उठता है तथा दक्षिण में तुलसी– डोंगर (दरभा घाटी) तथा दक्षिण–पश्चिम में टंगरी – डोंगर (बस्तानार घाटी) के प्रपाती ढाल के द्वारा क्रमशः नीची होती जाती है। जगदलपुर से दक्षिण तथा पश्चिम में यह पठार क्रमशः तुलसी– डोंगर तथा टंगरी डोंगर की पहाड़ियों तक विस्तृत है। यह पठार ग्रेनाइट तथा नाइस शैलों से बना है। अतः इसकी आकृति गुम्बदाकार हैं। अपने नीचे की ग्रेनाइट तथा नाइस शैलों से अधिक कठोर होने के कारण इन शैलों ने प्रपाती ढाल को जन्म दिया है। इन्द्रावती नदी की घाटी बहुचक्रीय प्रदेश है। इन्द्रावती नदी इस पठार में पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर प्रवाहित होती हुई दो स्थानों पर विसर्पण की आकृति बनाती है और समतल प्राय मैदान का निर्माण समुद्र सतह से क्रमशः 700 मी. और 600 मी. की ऊंचाई पर चित्रकूट गार्ज में पहुंचने के पूर्व बनाती है। यहां नदी द्वारा निर्मित तीन अपरदन चक्रों के प्रमाण मिलते हैं इन्द्रावती नदी अध्यारोपित नदी है।

iv. **दक्षिण का पठार** – इस प्रदेश का विस्तार दण्डकारण्य के अधिकांश भागों में तथा बीजापुर और कोटा तहसीलों के उत्तरी भागों में विस्तृत है। इस पठार को उत्तर–पूर्व तथा उत्तर–पश्चिम में इन्द्रावती नदी की घाटी तथा दक्षिण की ओर गोदावरी – सबरी की घाटी अलग करती है। यह पठार पूर्व की और सुकमा घाटी में तीव्र दाल द्वारा उतरता है। इस पठार के दक्षिण–पूर्वी भाग पर टिकनपल्ली की पहाड़ियां है। इस पठार के मध्य भाग में उत्तर से दक्षिण दिशा में विस्तृत बैलाडीला की पहाड़ी है जिसकी समुद्र सतह से औसत ऊंचाई 1200 मी. है। बैलाडीला पहाड़ी पर 1343.5 मि. टन लोहे का जमाव है। यहां कुल (14 निक्षेप हैं, जिनमें लोहे की शुद्धता की मात्रा 60ः से 70ः तक है।

v. **गोदावरी सबरी का मैदान** – दक्षिण का मैदानी भाग उर्मिल है। इस घाटी की औसत चौड़ाई लगभग 25 कि.मी. है। इस घाटी का विस्तार उत्तर में बीजापुर तहसील से दक्षिण में कोटा तहसील तक है। कड़प्पा शैलों से निर्मित बीजापुर तहसील की पश्चिमी सीमा पर उसूर की पहाड़ी) स्थित है। इसके उत्तर में अलबाका की पर्वत श्रेणियां हैं। कॉंटा तहसील के दक्षिण भाग में गोलापल्ली का पठार है। सबरी घाटी के मैदान की मिट्टी लाल दोमट किन्तु अनुपजाऊ हैं। गोदावरी–राबरी के मैदान में (टिन मिलता है। कोटा में टिन, कोरण्डम, अभ्रक और मैग्नेसाइट खनिज पाये जाते हैं। बीजापुर के दक्षिण भाग में चूने का पत्थर, कोरण्डम और गार्नेट खनिज मिलते हैं।

क्षेत्रफल	▪ 39060 वर्ग किमी.
विस्तार	▪ संपूर्ण बस्तर संभाग, राजनांदगांव (मोहेला व मानपुर तहसील) 8 जिलों में विस्तार।
औसत ऊंचाई	▪ 700–900 मी.
शैल समूह	▪ धारवाड़ (लौहअयस्क), पल्सर (टिन)
सबसे ऊंची चोटी	▪ नंदीराज (1210 मी.)
प्रमुख नदियां	▪ इंद्रावती, शबरी, कोटरी तालपेरू
प्रमुख जनजातियां	▪ अबुझमाड़िया, मुड़िया, मुरिया, गोड़, परवा, भतरा
औसत वर्षा	▪ 140 सेमी.–187 सेमी. (अबुझमाड़ सर्वाधिक वर्षा वाला क्षेत्र)
मिट्टी	▪ लाल बहुई मिट्टी, लाल दोमट मिट्टी
फसल	▪ मोटे अनाज, कोदो, कुटकी, मक्का, कुल्थी

नोटः–

- ✓ इन्द्रावती नदी बस्तर संभाग को दो भागों में बाटती है।
- ✓ केशकाल घाटी को बस्तर का प्रवेश द्वार कहा जाता है।
- ✓ ओरछा तहसील को अबुझमाड़ का प्रवेशद्वार कहा जाता है।